शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण जीवन का समाजशास्त्र

कमल वास्कले (शोधार्थी)
समाजशास्त्र
डॉ. बी एल. पाटीदार (निर्देशक)
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

ग्रामीण जीवन समाजशास्त्र की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत ग्रामीण जीवन का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत ग्रामीण पर्यावरण से जुड़े हुए अनेक सामाजिक सम्बन्धों, तथ्यों, सिद्धांतों तथा समस्याओं का विस्तृत अध्ययन किया जाता है। एक विज्ञान के रूप में ग्रामीण जीवन में समाजशास्त्र में गाँव के विभिन्न संगठनों, संस्थानों, प्रक्रियाओं, आर्थिक एवं सामाजिक ढाँचे का अध्ययन किया जाता है, जो गाँव के विकास एवं उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तावना

समाजशास्त्र में अध्ययन की सुविधा के लिए समय-समय पर अनेक शाखाओं और उपशाखाओं की स्थापना की गई है। मानव समाज और संस्कृति के अध्ययन के लिए सांस्कृतिक मानवशास्त्र विषय का विकास हुआ। इसी प्रकार अनेक शाखाएं समाजशास्त्र में विकसित हुईं। विभिन्न समाज जैसे आदिम समाज, नगरीय समाज तथा औद्योगिक समाज आदि के विशेष अध्ययन के लिए समाजशास्त्र में सामाजिक मानवशास्त्र, नगरीय समाजशास्त्र, औद्योगिक समाजशास्त्र आदि विभिन्न शाखाओं का विकास हुआ। इसी क्रम में ग्रामीण समाज का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, विशेष, गहन एवं सारगर्भित अध्ययन करने के लिए ग्रामीण समाजशास्त्र की स्थापना की गई है। ग्रामीण जीवन में समाजशास्त्र का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समाज में समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से अध्ययन करके ग्रामीण समाज की सामाजिक व्यवस्था और उनमें होने वाले परिवर्तनों का गहन अध्ययन करना व उनसे संबंधित समाजशास्त्रीय सिद्धांतो का निर्माण करना है।

ग्रामीण जीवन का समाजशास्त्र

ग्रामीण जीवन में समाजशास्त्र के अर्थ को समझने के लिए इसके शाब्दिक अर्थ एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओ का अध्ययन आवश्यक है। ग्रामीण समाजशास्त्र तीन शब्दों ग्रामीण, समाज, शास्त्र से मिलकर बना है। समाज शब्द से तात्पर्य व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधो की व्यवस्था से है। ग्रामीण पर्यावरण में रहने वाले व्यक्तियों के पारस्परिक संबंधो की व्यवस्था को ग्रामीण समाज कहा जाता है। इस प्रकार से ग्रामीण समाज के क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित अध्ययन करने वाले शास्त्र को ग्रामीण समाजशास्त्र कहते हैं।

ग्रामीण जीवन में समाजशास्त्र के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न समाजशास्त्रियों ने इसकी परिभाषा दी हैं :

1.एफत्र स्टुअर्ट चैपिन - "ग्रामीण जीवन का समाजशास्त्र ग्रामीण जनसंख्या, ग्रामीण सामाजिक

संगठन एवं ग्रामीण समाज मे कार्यरत सामाजिक प्रक्रियाओं का अध्ययन है।"

2.ए. आर. देसाई ने 'रूरल सोशिओलोजी इन इण्डिया' पुस्तक में स्पष्ट किया है कि "ग्रामीण जीवन में समाजशास्त्र का आधारभूत कार्य ग्रामीण समाज के विकास के सिद्धांतों का अन्वेषण करना है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण पर्यावरण से जुडे हुए अनेक मामले, समस्याओं, तथ्यों व सामाजिक संबंधों का विस्तृत अध्ययन करना है। ग्रामीण समाजशास्त्र, समाजशास्त्र की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत ग्राम्य जीवन का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

ग्रामीण समाजशास्त्र का क्षेत्र

भारतीय सभ्यता और संस्कृति ग्रामाधारित है। इसने अपना एक समाजशास्त्र विकसित किया है। ग्रामीण समाजशास्त्र के क्षेत्र में विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अपने विचार निम्न प्रकार से व्यक्त किए हैं:

टी. लीन. स्मिथ ने 'द सोशिओलोजी ऑफ़ रूरल लाइफ' में ग्रामीण समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है :

1. जनसंख्या - स्मिथ के अनुसार जनसंख्या के अध्ययन को महत्व देना आवश्यक है, क्योंकि ग्रामीण समाज और ग्रामीण जीवन, ग्रामीण जनसंख्या के लक्षणों के ज्ञान पर आधारित होता है।

अतः ग्रामीण जनसंख्या का वितरण, घनत्व, वृद्धि, जनसंख्याका आगमन निगमन आदि का भी अध्ययन करना आवश्यक है। बड़वानी जिले की कुल जनसंख्या 13,85,659 में ग्रामीण जनसंख्या 11,81,786 निवास करती है और ग्रामीण जीवन में लिंगानुपात 985/1000 पुरुषों पर महिलायें हैं तथा ग्रामीण जीवन में कुल साक्षरता 50.2 प्रतिशत में ग्रामीण साक्षर 44.9 प्रतिशत है। बड़वानी जिले की जनसंख्या जो वर्ष 2001 में 1081441 जो बढ़कर वर्ष 2011 में 13,85,659 हो गई है।

2. सामाजिक संगठन - सामाजिक संगठन के अन्तर्गत निम्न तीन बिन्दुओं का अध्ययन करना आवश्यक बतलाया है :

अ. मानव का भूमि से संस्थानिक संबंध

ब. सामाजिक शरीर रचना

स. प्रमुख सामाजिक संस्थाएं

3. सामाजिक प्रक्रियाएं

स्मिथ ने इसके अन्तर्गत निम्न दो श्रेणियो में ग्रामीण समाजशास्त्र का क्षेत्र बताया है :

अ. संगठनात्मक प्रक्रियाएं

ब. विघटनात्मक प्रक्रियाएं

ग्रामीण जीवन का समाजशास्त्र में महत्व

ग्राम हमारे समाज के एक प्रमुख और महत्वपूर्ण अंग हैं। इसका अस्तित्व नगरों की अपेक्षा अधिक पुराना है। ग्राम नगरों के स्रोत माने जाते हैं तथा इसका महत्व अनेक दृष्टियो से प्रत्येक समाज में सर्वोपरि है। ग्राम की वास्तविक झांकी दर्शाने हेतु हमें ग्रामीण समाजशास्त्र का ही सहारा लेना पड़ता है। इस दृष्टिकोण से इस शास्त्र का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक समस्याएं उत्तपन्न हो गई हैं। जिसके निराकरण के लिए गाँवों और उनमें निवास करने वाले निवासियों के बारे में जानना अति आवश्यक है। अतः ग्रामीण समाजशास्त्र का महत्व और भी बढ़ जाता है।

निष्कर्ष

स्मिथ ने उपर्युक्त के अतिरिक्त सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक व्यवहार को भी ग्रामीण जीवन में समाजशास्त्र के क्षेत्र के अन्तर्गत रखने

का सुझाव दिया है। ग्रामीण जीवन में सामाजिक समस्याओं का अध्ययन कर उनका समाधान भी किया जाना आवश्यक है, जिससे ग्रामीण जीवन मे समाज का विकास हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ

1.D.A. Mathur (2011) Rural Sociology, Deepikavill, 3 A Jaipur (Rajsthan)
2.A.R. Desai (1958), Sociology Bulletin Vol.VI Sept.
3.Dhul Singh (1977), A Study of Land Reform in Rajasthan, Birala Collage, Pitni quoted by S.M.Sinhin in his book rural development planning and reforms , Pp. 110-111
4.A.C. Mayar (1961) Rural Leaders and the Indian General Election, Assian Survey.k~ Pp~ - 23-29
5.Community (1961) Development and Peoples Participation Kurukshtra.k~ Pp~ - 20